Nav Jyoti, Vol. 6, No. 12, January-June 2018 ISSN : 2249-7331

महिलाओं के प्रति हिंसा बलात्कार एवं छेड़छाड़ एवं अपहरणः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

मनोज कुमार

व्याख्याता, सिल्ली कॉलेज, सिल्ली

महिला हिंसा

सीमोन द वाउवर ने बताया कि जैविक आधार पर स्त्रियों को पुरूषों के अधीन माना जाता है। जो गलत है। नारीत्व स्त्री के हाथ की सर्वोतम वस्तु है, जिसे इच्छानुसार बना सकता है। लडकों को शुरू से समझाया जाता है कि वो लडका है इसलिए अलग है साथ ही श्रेष्ठ भी। एक लडकी नारीत्व को आत्मग्लानि के साथ स्वीकार करती है और भविष्य के रास्ते पर शर्म के साथ चलना प्रारंभ करती है। अपने अधिकारों का दावा उन पर दृढ रहने की चाह तथा दूसरी ओर विवाह के बाद अपने पति के लिए अधिकारों का त्याग तथा विलयन की चाह के बीच बंटी हुई एक ओर निरंतर तनाव झेलती हुई वह टूट जाती है। समाज की आम धारणा कि औरत जीवन देती है[1], जबकि पुरूष अपने जीवन को वक्त, बेवक्त दांव पर लगाकर बाकियों के जीवन की रक्षा करता है, इसलिए वे श्रेष्ठ हैं। स्त्रियों को अधीन करने के लिए सामाजिक नियमों, रीति–रिवाज, मूल्यों तथा परंपराओं की सहायता ली जाती है और स्त्रियों को यह सिखाया जाता है कि वे इन्हीं मूल्यों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें, जो स्वतः उन्हें पुरूषों के अधीन बना देगा। ऐसा इसलिए क्योंकि ये नियम, मूल्य तथा परंपराएं पुरूष ने स्त्री को अधीन बनाए रखने के लिए ही बनाए हैं। इस प्रकार सीमोन जैसे रेडिकल नारीवादियों ने उस दुनिया को उजागर किया, जिसमें पुरूष महिलाओं के शरीर पर नियंत्रण करते हैं और मातृत्व या यौन गुलामी की ओर ढकेल देते हैं।

इस प्रकार नारीवाद एक ऐसी विचारधारा के रूप में उभरा जिसमें महिला उत्पीडन के विभिन्न पहलुओं को समझाने के लिए व्यक्तिगत, राजनीतिक तथा दार्शनिक पहलू शामिल होते हैं और वक्त के साथ यह विचारधारा भी गतिशील तथा निरंतर परिवर्तनशील होती गई, लेकिन इन परिवर्तनशील विचारधारा में भी एक बात जो सामान्य थी और वह यह थी कि यह सभी मौजूदा स्त्री पुरूष संबंधों को बदलने की दिशा में केंद्रित थी। दूसरे शब्दों में ये विचारधाराएं इस तथ्य पर जोर देती है कि न्याय के लिए महिलाओं को स्वतंत्रता तथा समानता देनी चाहिए। इन्होंने महिला उत्पीडन, समस्याओं, वेदना के कारण, परिणाम, समाज पर इसका असर को मुददा बनाया। इनके प्रयासों के कारण महिलाओं द्वारा सही जाने वाली समस्याएं सामने आने लगी। जिसकी लंबी तथा लगातार जैसी, राजनैतिक असमानता, बाल विवाह, वैतनिक भेदभाव, पर्दा प्रथा, अशिक्षा, पारिवारिक भेदभाव, शारीरिक उत्पीडन, बलात्कार आदि लंबी होती लिस्ट में एक कडी या समस्या और प्रकाश में आई एवं जुडी जो थी महिला हिंसा। हालांकि नारीवादियों द्वारा इस शब्द का प्रयोग नहीं किया गया, परंतु उन्होंने परिवार में होने वाली हिंसा को अपने लेखों में अवश्य स्पष्ट किया।[2] यहीं पर महिला हिंसा के स्वरूप स्पष्ट तौर पर उजागर होते गए।

पारिवारिक संबंध में उससे जुडे किसी सदस्य के द्वारा जानबूझकर किया गया कोई भी कार्य उपेक्षा आचरण या व्यवहार जिससे दूसरे संबंधी सदस्य को किसी प्रकार का आर्थिक भावात्मक मानसिक शारीरिक यौनिक मानसिक चोट या हानि पहुंचे या पहुंचने की आशंका हो तो वह भी महिला हिंसा का भाग माना जाता है। इन संबंधों में विवाह संबंधी रक्त संबंधी गोद लिए हुए तथा सहमति के साथ रहने वाले संबंधी भी आ जाते हैं।

पति पत्नी के संबंधों में महिला हिंसा का अर्थ है– दोनों में से किसी के द्वारा भी जानबूझकर किया गया कोई कार्य आचरण व्यवहार जिससे जीवनसाथी को किसी या उससे जुडे संबंधी या वस्तु को

किसी भी प्रकार का शारीरिक यौनिक भावात्मक आर्थिक मानसिक आघात पहुंचे या पहुंचने की आशंका हो तो उसे महिला हिंसा कहेंगे।

महिला हिंसा के अनेक स्वरूप हो सकते हैं। पर इन्हें स्पष्ट रूप से दो भागों में बांटा जाता है– पहला आम दांपत्य मूलक हिंसा एवं दूसरा प्रताडना। आम दाम्पत्यमूलक हिंसा में लगातार चलने वाली कुंठा और क्रोध से उत्पन्न दुर्व्यवहार आतें हैं जो शारीरिक चोट या प्रताडना के रूप में सामने आ जाते हैं। प्रताडना में दुर्व्यवहार गंभीर एवं अधिक उग्र हो सकती है, परंतु इसका रूप एवं प्रभाव छुपा हुआ होता है। इसमें गालियां देना, आतंकित करना और धमकाना आदि जैसी क्रियायें आती हैं। इसमें नियंत्रणकारी एवं एकाधिकार स्थापित करने वाले व्यवहार भी आतें हैं, जो सामने वाले के मनोबल पर प्रहार करते हैं।[3] प्रताडना के प्रभाव आम दाम्पत्यमूलक हिंसा के प्रभाव से अधिक शक्तिशाली होते हैं।

कहा जाता है कि परिवर्तन अवश्यंभावी है तथा शश्वत सत्य है। परंतु लगता है कि स्त्रियों के विषय पर आकर यह शाश्वत सत्य भी झूठा साबित हो जाता है। इस परिवर्तनशील संसार में दो चीजें नहीं बदली–एक नारी की स्थिति तथा दूसरा नारी से जुडी समस्यायें तथा उनसे जुडे कडवे सच। लैंगिक पक्षपात हमारे समाज का सबसे बडा सच हैं। लिंग एक जैविकीय तथ्य है, परंतु अगर इसमें किसी प्रकार की असमानता जोड दी जाये या इसके आधार पर किसी प्रकार काभोदभाव किया जाये, तो यह सामाजिक तथ्य बन जाता है। जिसे लैंगिक असमानता या पक्षपात कहा जाता है। यहां लैंगिक पक्षपात न केवल पारिवारिक स्तर पर बल्कि शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुरक्षा आर्थिक एवं राजनैतिक सभी क्षेंत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जाता हैं लैंगिक पक्षपपात को हम परिवार से ही प्रारंभ होता हुए देखते हैं।

भारत में लगभग 60 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जहां आज भी लडकी का पैदा होना मातम की बात होती है। बाकी परिवार तो लडकी चाहते हैं परंतु बेटा होने के बाद। कई घरों में तो लडकी के पैदा होते ही नमक चटाकर, गला घोंअकर या अन्य तरीके अपनाकर मार दिया जाता है। यहां पर यह भी घटते लिंग अनुपात का यह सबसे प्रमुख कारण है। राजस्थान, हरियाणा जैसे राज्यों में तो कई गांव ऐसे हैं जहां लडकियां हैं ही नहीं, क्योंकि उनको पैदा होते ही मार दिया जाता है। यहां तक कि पंजाब जैसे विकसित राज्य में भी लोगों की मानसिकता है कि वंश परंपरा को आगे बढाने के लिए लडका का होना आवश्यक है न कि लडकी का होना। पहली संतान लडकी होने पर लोग सहानुभूति प्रकट करने लगते हैं कि कोई बात नहीं, दुखी मत हो, दूसरी संतान भगवान ने चाहा तो अवश्य लडका ही होगा। लडका होने से मां का परिवार में हैसियत बढ जाता है। लोग यहां तक की स्वयं स्त्रियां भी पूजा करती हैं मन्नतें मानती हैं कि उनके घर लडका पैदा हो। जब जन्म को लेकर इतना भेदभाव है तो स्वयं स्पष्ट है कि एक लडकी का पूरा जीवन कितना भेदभावपूर्ण होता हैं। आधुनिक युग में लिंग परीक्षण की सुविधा के बाद लाख कानूनी रोक के बावजुद लिंग परीक्षण के बाद बालिका भ्रूण हत्या धडल्ले से सभी राज्यों में कम या अधिक बदस्तूर जारी है।

परिवार के अंदर प्रारंभ से ही एक लडकी को भेदभाव पूर्ण पारिवारिक परिवेश मिलता है। लडकों को समझाया जाता है कि वे श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे लडके हैं। लडकियों को घर गृहस्थी से जुडे खिलौने दिये जाते हैं। सुदरता, मोहकता शालीनता का पाठ बचपन से ही पढाया जाता है। लडकियों को शीशे के सामने खडा होने नाचने गाने श्रृंगार करने आदि पर रोक नहीं लगाया जाता हैं परंतु लडका ऐसा करे तो इसके लिए उसे डांट पडती हैं उसे पौरूष से जुडी बातें सिखने पर बल दिया जाता है। यहां तक कि सिमोन ने कहा कि एक लडकी पैदा नहीं होती उसे लडकी बना दिया जाता है।

दहेज प्रताडना तो यहां पर आम बात है। यहां पर हर चार से पांच घंटे में एक दहेज प्रताडना या दहेज हत्या अवश्य होती है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरों के अनुसार युनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार दहेज से संबंधित हिंसा भारत में निरंतर बढती जा रही है। यहां लगभग पांच हजार महिलाओं की हत्या प्रति वर्ष उनके पतियों या ससुराल वालों के द्वारा अवश्य की जाती है। दहेज की मांग पूरा न कर पाने की स्थिति में दुर्घटना का नाम देकर रसोईघर में ही उसे जला दिया जाता हैं औसतन प्रतिदिन

5 महिलाएं इस प्रकार से जलाई जाती हैं औरकितने मामलों में तो इस प्रकार हुई दुर्घटनाओं की तो जानकारी ही नहीं मिल पाती है।[4]

कामकाजी विवाहित स्त्रियों की स्थिति तो और भी बुरी है। स्वावलंबी औरतों से भी यह उम्मीद की जाती है कि वे घर का कामकाज संभाले, बच्चों की परवरिश पर भी ध्यान दें। साथ ही पति को भी खुश रखे। बचपन से संस्कारों के बीच पली स्त्री भी चेष्टा करती है िकवह विवाह के बाद होने वाली अतिरिक्त जिम्मेदारियों को अपने उपर ले ले। वह एक सुघड गृहस्थिन, एनिष्ठ मां तथा भोग्या पत्नी बनी रहना चाहती है, नतीजा है औरत की अपनी जिम्मेदारियों में बृद्धि तथा थ्कान। एक स्त्री सबका मन रखने के लिए जिम्मेदारियों की अंतहीन लबी चादर ओढ लेती है और उसके बाद उसे मिलता क्या है, बात बात पर ताना, यातनाएं और यहां तक कि पति की हिंसक पिटाई।[5]

आर्थिक क्षेत्र में भी स्त्रिया पुरूषों से बहुत पिछडी हुई हैं। पुरूषों के समान कार्य के लिए उनहें कम वेतन मिलती है। इनकी कार्यशीलता असंगठित क्षेत्रों में अधिक है, जहां न कोई प्रावधान है और न उनके हक के लिए कोई मजदूर संघ ही काम करता है। भारी उदयोगों में निर्यात संबंधी उदयोगों में ये अधिक कार्यशी हैं जहां काम कि परिस्थितियां काफी कठिन है और वेतन कम। कृषि क्षेत्र में भी ये पुरूषों की सहभागी भर ही हैं सरकारी कार्यक्रमों में घर से जुडे काम करने तथा पारंपरिक एवं घरेलू कामों में प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है पर ये विचार ऐसी सामाजिक मान्यताओं को पुष्ट करती हैं जो कि घर को ही और के काम का मुख्य क्षेत्र मनतें हैं और जिससे औरतें नई तकनीकी ज्ञान में पीछे रह जाती हैं।

भारत जैसे धार्मिक देश में जहां स्त्रियों की पूजा करनी चाहिए जैसी कथाएं प्रचलित हैं वहीं महिलाएं पितृसतात्मक सामाजिक व्यवस्था के नीचे पीस रही है। इनकी श्रम बाजार में निम्न स्तरीय भागीदारी निम्नस्तरीय विकास तथा कुशलता के निम्नस्तर का सीधा संबंध इनके निम्न शैक्षिक स्तर से है। लाख कानून बने, नियम बने, लागू हों विकास की नीतियां बनाई जाए पर पुरूष मानसिकता आज भी महिला को सहयोगी मानने की नहीं बन पाई है। अगर महिला हंसमुख एवं मिलनसार है तो चालू मानी जाएगी अगर चुप अपने में सिमटी तो घमण्डी कही जायेगी। यौन अपशब्द तथा दुर्व्यवहार राह चलते बस महिलाओं का ही इंतजार करते रहते हैं। अगर लडकी विरोध कर दे तो तुरंत होगा कि लडकी का चाल चलन ठीक नहीं था, कपउे भडकाउ पहने थे। जिस देश में नारी की पूजा करने की बात की जाती है वहां पूजा तो आज तक नहीं पायी पर डायन का आरोप लगाकर नंगा गांव में घुमाने मार डालने मुंह पर कालिख पोतने की घटना जरूर आम खबर की तरह अखबारों की सुर्खियां बनती रहती हैं।

भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत अपराध एवं हिंसा– इसके अंतर्गत 7 प्रकार के हिंसा को सम्मिलित किया गया है[6]:–

1. बलात्कार धारा 376
2. अपहरण धारा 363/373
3. दहेज हत्यायें धारा 302/304
4. पत्नी को पीटना धारा 498ए
5. शारीरिक छेडछाड धारा 354
6. यौन उत्पीडन धारा 599
7. लडकियों का आयात करना धारा 366 ख

भारत मे वृहद रूप में प्रतिवर्ष लगभग 14000 बलात्कार, 28000 शारीरिक छेडछाड, 14000 अपहरण, 31000 यातनाएं, 5000 चिढाने संबंधी और लगभग 5000 दहेज मृत्यू की घटनायें होती हैं।[7]

एनसीआरबी के 2006[8] के अनुसार 1971 से लेकर अब तक बलात्कार के मामलों 700 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2006 से प्रतिदिन औसतन 53 बलात्कार के केस फाइल हुए हैं। इसमें सबसे शर्मसार

करने वाली बात यह है कि बलात्कार के मामले में अपनों की भूमिका घातक होती है। ब्यूरो रिकार्ड के अनुसार बलात्कार के 75.2 प्रतिशत मामले में अपने लोग ही शामिल होते हैं यहां तक कि 3 प्रतिशत अति निकट संबंधी, अभिभावक ही बलात्कार केस में सम्मिलित थे।

दहेज हत्या के मामले में लगभग हर वर्ष 10 प्रतिशत की औसतन वृद्धि दर्ज की जाती है। 2005 की तुलना में 2006 में हर वर्ष 12.2 प्रतिशत की औसतन वृद्धि दर्ज की जाती है। राष्ट्रीय महिला आयोग के पास वर्ष 2007 में आई 16 हजार शिकायतों में सबसे अधिक दहेज हत्या तथा प्रताडना के मामले थे। एनसीआरबी के अनुसार 2007 में कुल 2276 महिलाओं ने दहेज प्रताडना के चलते आत्महत्या की अर्थात एक दिन में लगभग 6 महिलायें प्रताडना की घटना हर घंटे 4–5 हो जाती है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15–49 वर्ष की 70 प्रतिशत महिलायें किसी न किसी रूप में हिंसा की शिकार होती है। पति तथा रिश्तेदारों द्वारा महिलाओं पर हिंसा के मामले में 2005 से 2006 के बीच 9.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई।[9]

एनसीआरबी के अनुसार वर्ष 2003 में 50703, वर्ष 2004 में 55439 तथा 2005 में 111563 केस दर्ज हो चुके थे।[10] राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण की 2000 की रिपोर्ट के अनुसार पत्नियों की सबसे अधिक पिटाई पति द्वारा शक के कारण होती है। पिटाई के अन्य कारण हैं पत्नी के घरवालों से पैसा या अन्य सामान न मिलना, पत्नी द्वारा सुसराल वालों का अनादर घर तथा बच्चों की उपेक्षा करना, खाना ठीक से न बनाना आदि।

एनसीआरबी के 2007–08 के रिपोर्ट के अनुसार भारत में विभिन्न राज्यों में महिला हिंसा की स्थिति बहुत चिंताजनक है। आंध्रप्रदेश का हैदाराबाद की महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित शहर है। यहां पर कुल महिलाओं के साथ हिंसा की 24738 केस दर्ज हुए जिसमें 613 दहेज हत्या, 1070 बलात्कार तथा 11335 घरेलू हिंसा के केस थे। उतर प्रदेश इसके बाद के नंबर पर रहा जहां कुल 21215 केस दर्ज हुए, जिसमें 2066 दहेज हत्या तथा 1532 बलात्कार के थे। कर्नाटक में इसी प्रकार 6569 केस, चंडीगढ में 3775 केस, दिल्ली में 1011 केस दर्ज हुआ। बिहार में 59 प्रतिशत घरेलू हिंसा के केस दर्ज हुए। जिसमें 1555 बलात्कार तथा 1172 दहेज हत्या के थे।

भारत में महिलाओं के विरूद्ध हो रही हिसां में रेप की संख्या में दिनों दिन बढोतरी हो रही हैं। एनसीआरबी के तहत 1973 में जहां इसकी संख्या 2919 थी वर्तमान में यह 20262 है। एनसीआरबी के 2012 के आंकडों में बलात्कार के 24206 की संख्या थी। मध्यप्रदेश में यह 3406, प बंगाल में 2363, उतरप्रदेश में 2042 एवं राजस्थान में 1800 बलात्कार के केस दर्ज हुए। झारखंड में यह संख्या 1123 थी। रिपोर्ट के अनुसार आश्चर्यजनक ढंग से 10 में से 9 मामले में बलात्कार अपनों के द्वारा ही किया गया। दिल्ली में 96.6 प्रतिशत बलात्कार के केस अपनों या पहचान वालों के द्वारा थे।

पूर्वोतर राज्यों में महिलाओं के प्रति अपराध की संख्या अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम है। वर्ष 2011 में अरूणाचल प्रदेश में यह 115, असम में 31 एवं मणिपुर में 188 मामले दर्ज किये गये।

राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण की ताजा रिपोर्ट के अनुसार 15 से 49 आयु समूह की महिलाओं के बीच 35.4 प्रतिशत तथा विवाहित महिलाओं का 40 प्रतिशत को किसी न किसी प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक प्रताडना के दौर से आवश्यक रूप से गुजना पडता है। उसी प्रकार से इसी आयु समूह की 3 महिला में से 1 महिला ने शारीरिक दुर्व्यवहार तथा 10 में से 1 ने यौनिक दुर्व्यवहार को भोगा था। विवाहित महिलाओं में से हर 5 में से 2 महिला ने शारीरिक या यौनिक दुर्व्यवहार को सहा हैं यौनिक दुर्व्यवहार 49 प्रतिशत निम्न आयवर्गीय परिवारें मे तथा 18 प्रतिशत उच्च आयवर्गीय परिवारें में अधिक होता है। ग्रामीण इलाकों में तो महिला हिंसा नगरों से कहीं अधिक होती है।

इस तरह हम देखते हैं कि महिलाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार लगातार बढते जा रहे हैं यहां पर यह बताना आवश्यक है कि शर्म की संस्कृति तथा पुलिस पर अविश्वास जैसे कई अन्य कारणों की वजह से महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा की रिपोर्टिंग की संख्या बहुत कम हैं अगर इमानदारी

से इन सारे आंकडों को संकलित किया जाय तथा सारी घटनाओं की रिपोर्टिंग हो तो आंकडों के दुगने हो जाने की उम्मीद है।

भारत में संविधान के अलावा अनेक कानून पारित हुए हैं जो महिलाअें के विशेष हितों के लिए हैं जैसे दहेज निषेध अधिनियम। महिलाओं के लिए बने अनय कानून तथा अधिकारों के बावजूद महिलाएं हर कदम पर भेदभाव तथा हिंसा की शिकार होती हैं। हिंसा के विभिन्न रूप की तरह इनके होने के कारण सहने के कारण तथा प्रभाव आदि भी अलग अलग होते हैं। महिला हिंसा जो अब समाज में व्यापक रूप ले चुका है और एक दानव की तरह महिलाओं का जीवन उनकी खुशियां तथा उनके आत्मसम्मान को निगल रहा हैं उनके सहने को कम प्रकाश में आने के कारण उनकी परिस्थितियों को बदल रहा हैं ।

संदर्भ सूची

1. फेलसन आर एंड आउटला एम, 2007, दी कंट्रोल मोटिव एंड मैरिटल वायलेंस एंड विटिम्स, वॉल्यूम 22/4 पृ 3
2. गोपालन सरला,1995, वीमेन एंड एंप्लायमेंट इन इंडिया, हर आनंद पब्लिकेशन, दिल्ली पृ 23
3. गूरी जी एस, 1961, कास्ट क्लास एंड ऑकुपेशन, पोपुलर बुक डिपो बांबे पृ 45
4. हाउस एंड वहीलर, 2005, दी मैटेरियल कल्चर एंड सोशल इंस्टीज्युषंस ऑफ सिंपल पिपुल, जॉर्ज एलेन एंड यूनेरियन, लंदन पृ 90
5. हडसन गीर्ट, 1980, कल्चर्स कंसेक्वेंसेज, सेज पब्लिकेशन, इंडिया पृ 123
6. हैमेल जे, 2005 जेंडर इन्क्लूसिव ट्रीटमेंट ऑफ इनटिमेट पार्टनर एब्यूज, स्प्रिंगर पब्लिकेशन, न्यूयार्क पृ 67
7. हेडी बी स्कॉट, 1997, डोमेस्टिक वायलेंस, डाटा फ्राम दी इंटरनेशनल सोशल सांइंस सर्वे, दिल्ली पृ 10
8. एनसीआरबी रिपोर्ट 2006
9. जयवर्धने कुमारी, 1987, फमिनिस्ट एंड नेशनलिस्म इन दी थर्ड वर्ल्ड, जेड प्रेस लंदन, पृ 90
10. एनसीआरबी रिपोर्ट 2007
11. जयसिंह इदिरा, 1986, द पॉलिटिक्स ऑफ पर्सनल लॉ, द लॉयर्स कलेक्टिव, दिल्ली पृ 234

Indian Indigenous Knowledge for Ecological Resource Management

Dr. P.K. Choudhary

Associate Professor Deptt. of Sociology, Ranchi University, Ranchi (Jharkhand)

Introduction of Indian Indigenous Knowledge:

In ancient India the adequate development of Knowledge had been completed during the period of *INDUS VALLY* Civilization and *Vedic* Period. During the period of *INDUS VALLY* Civilization the Indians had knowledge which was in fact about 4000 (four thousand) Years old Before Christ.

The *Vedic* Civilization was developed in India after ancient *INDUS* Civilization. In *Vedas*, the *regved* is one of the oldest book in the whole world. The word *'veda'* had been derived from the root word *'vid* which means knowledge'. The knowledge of *aryan's* during the *vedic* period is based on many of the *mantras* (i.e. Chanting) contained in *Vedas*. In the *rigvedas* and *yajurveda* there is numerous description of universe while *ather Vedas* gives knowledge of Geography.

The Earth, The Atmosphere, the Oceans, the great Oceans, the Clouds, the winds, changes of session and description of earth sights found in the *mantra's* (i.e. chanting) contained in *rigvedas*, shamvedas as well as *arthevedas*.

In Vedas and its later epics, there is description of origin of the universe, revolving round the earth, days and nights, all sorts of climatic changes and rivers etc. are found in the *brahamans* epics, the *upnisads* as well as *purans*.

Knowledge of the of affects on account of human activities, had been adequately developed during the *vedic* period.

Description about the climate is most Probably found especially in *bayu puran, shiv puran, skand puran* and *bhagwat puran.*

The development or origin of Indian Indigenous Knowledge can be classified into the following seven important Ages:-

(i) Indus Civilization Age which had been existing Prior to 4000 B.C. up to the years 1500 B.C.

(ii) *Vedic* Age which is considered post *Indus* Period after *sindhu* Civilization. This period in the time prior to about the years 2500 B.C. up to the years 1,000 B.C. that means the period of pre-*budhhist*. Its existence have been found over the sports of *HASTINAPUR, KAOSHAMBHI, KALINGA* places etc. During this very period *Vedas* had been composed. This during time or period is divided in to two sub parts:

(a) *Sanghit* Period had been continued since the years, 2500 B.C. up to the years, 1500 B.C. during this period four *Vedas, brahamans* epics as well as *aaranyak* epics had been composed.

(b) Period of *upnishad* had been existing prior the years 1500 B.C. up to the years 600 B.C. wherein some epics of ancient and oldest age had been there. These ancient *purans* wire also called *pnchum Vedas*.

(iii) The epic Age means period of the *Ramayana* and the *Mahabharta* had been prior to about the Years 1600 Before Christ up to the period of 600 B.C. years.

(iv) *Panini* Age, the *asthadiyee* epic has been composed during paning age. This period was so important owing to which this period time called *bhumiparb*.

(v) Buddhist Age has been existing during the period prior to years 600 B.C. up to the years 2000 B.C.

(vi) The period of *poranik* age period to the years 1000 B.C. up to the years 300 B.C. Thereafter since the years 200 up to the years 800 B.C. New *purans* has been composed. During this period, Economics of *koutily* (i.e. *CHANYAK*) was written. In the new *purans-kurm puran, matyash puran*, as well as *brahmand purans* were composed/written.

(vii) The Age of Ashoka- this of has been the age of Administrative period of GUPTA Age. During the Period of this age Archeology department of India had undertaken the digging work from which STONE- WRITINGS were achieved from the places like SANCHI, GAYA, SARNATH etc.

One the basic of above analysis we are able to say that development of knowledge first of all in India in the whole world had been taken place. Indigenous knowledge plays an important role towards Ecological Resource Management Still today. In other word indigenous knowledge is very relevant in Ecological Resource Management even in modern age.

(2) Indigenous knowledge and Ecological Resource Management:

Relationship between Indian knowledge and Ecological Resource Management is analyzed as follows:-

(A) **Conch Blowing:-** Traditionally on any Hindu holy/sacred occasion like *PUJA* (Pray to God) performance conch is blown. Due to its vibration and sound passed through air, all sorts of negative germs, bacteria are driven-away fully which makes the atmosphere quite fresh and clean. So conch bellowing is considered an important unit of Ecological Resource Management.

(B) **Margosa leaf:-** On the basis of Indigenous knowledge, the Indian people were having traditional practices, which efforts for storage of grains were made, margosa leafs were kept inside the grains as well as outside part of the grains to prevent germicidal attacks. But all over the world we are using several chemicals for storage of grains, which is very injurious to the health as well as contrary to the Ecology.

(C) **Cowdung:-** Generally in ancient period, people used to reside in houses made up of mud/soil, whose floor cleaning was done by cowdung. To-day the science has revealed that Cowdung possess the characteristic to kill germs and act as an antibiotic. This tradition was also an important for clean atmosphere.

(D) **Hawan Performance:-** It is also a fact which is being observed as a tradition in almost all Hindu societies, when the chanting of *mantras* takes place it is duly followed by the *Hawan* in which some herbal items are put into *Agni* (Fire) for being burnt. The smoke emitted by the herbal items put into *Agni* (fire) act as a purifier and completely purifies the atmosphere.

(E) **The Festival of Diwali:-** *Diwali* (festival) is considered as one of the main festivals of Hindus (religion). This tradition has been continued in HINDUS religion since ancient period. In this festival earthen lamps are lighted pouring into the oil. It is also called light festival or '*Prakash Parb*'. There is chief reason behind it that in that very evening in poisonous gas goes out from the earth which are taken to the sky at the earliest, besides this at that very time the affect of insects etc. are increased and due to the earthen lamps insects are killed owing to which atmosphere becomes fresh.

(F) **Sun God:-** The worshipping of sun can be found in almost all the Hindu Societies. On the basis of Indigenous knowledge people worship sun for long lives and for a happy and prosperous life. It is also scientifically proved that sun is the source of energy on this earth and due to its rags radiation there is no iota of virus or germs. Which gives life to almost all the living beings of the universe.

(G) **Earther Lamp:-** It is also a fact that traditionally earthen lamps are burnt during *puja* (pray to god) performances in which clarified butter is used which is also one of the important factor for purifying the air. This knowledge is also supportive for Ecological Resource Management.

(H) **Fig Tree:-** On the basis of *vedic* knowledge, Hindu people form religious point of view pour clean water to the roots of the fig tree. People believed that God Sani Deva resided in this tree. This performance is being done due to long life of this tree and getting blessing from sani *deva* (God). But scientifically we came to know fig tree is only tree which is giving continuous oxygen. It is universal truth that oxygen plays very important role for keeping human being and all living creatures of the universe alive.

(I) **Naturopathy:-** On the basis of Indigenous knowledge, we come to know that Indian have invented one therapy for treatment which is known as NATUROPATHY. In this method of treatment, the treatment is undertaken through natural wags. In such treatment, no medicine of Allopathy is used. For example if any person suffers from fever, he is advised to keep fasting and owing to continuous fasting his fever comes to an end and just like that if any person suffers from stomach disorder, in that case on the surface of the belly i.e. stomach a layer of soils is put and after some time wash out the soil in this way NATUROPATHY plays important role in health and the environment.

(J) **Yoga:-** Indian Indigenous knowledge has gained recognition all over the world due to *yoga*. The term *yoga,* in its technical sense, first occurs in the *taittirya* Upanishad and the *katha Upanishad;* But yogic practice is discernible in the earliest *Upanishads*. It is owing to its real factors of remedy for all sorts of human diseases. it has been scientifically proved that medical science also to some extent remains back when the real step of yoga is taken any one who practices *yoga* will certainly remain fit and healthy, which is one of the important factors of Ecological balance of the universe.

(K) **Celibacy:-** According to traditional knowledge and on the other hand from religious point of view, it has been prohibited to have any kind of sexual relation before marriage, must remain within the limitations of marriage so as to prevent veneral diseases or diseases like AIDA etc. It is one of the most important factors of safe guarding the lives of couple of society which makes the ecological balance of the universe.

(L) **Meditation:-** Meditation comes under the category of *yoga*. It is a kind of concentration in which people set properly inform of *padmashan* or setting at ease, being closed the eyes and relax their body. In Japanese language it is called *jhajhayan*. These kind of *KRIYA* (action) enrich the spiritual sense of the person. Today when half of the population is suffering from tension and depression. For treatment of such diseased people have to take so many medicines. But meditation proves that it is an important medicine for controlling above diseases. Therefore we can say that it is important unit for resource management.

(M) **Tulshi (Basil) Plant:-** On the basis of Indigenous knowledge it is believed that the God resides in tulshi (Basil) plant. So it is evident that we can find easily a tulshi plant in the homes of Hindu families, in which they pour water every day and worship it one a regular basis. Earlier it had no scientific basis; but now it is scientifically proven fact that tulshi plant emits some kind of radiation which kills bacteria and germs and other infection disease. In this way if this plant is planted almost all the houses, the environment, and atmosphere can be a fresh.

(N) **Ayurved:-** The *VEDA* in the ancient epic which is of six parts last part is called *aurved*. In this holy book there is description of different ailments and its treatment or remedy. In this method of treatment HERBAL Medicine is view that means herbs, plants and flower, fruits brought from *Jungle* (Forest) and treatment is carried out from there Herbs. for process and production of these medicines no any large factory is needed rather on being grinded these herbs medicine is prepared and administrated to the ailing individual of human beings or even to the animals, whereas for manufacturing Allopathic medicine big factories are needed due to which carbon dioxide, nitrogen mono oxide and poisonous gases come out which pollute the environment. If the method of *aurved* treatment is adopted there in every possibility to curs down the pollution from the environment to some extent. It is also note worthy to say that from this method of treatment there is no possibility of side effect.

(O) **River Ganga :-** GANGA RIVER has been considered Sacred since ancient period. Its description is found in many of the species. Those who take bath in this holy

river, the get the reward of good health. Traditionally, there was a custom to put copper coin into the River after being taken bath. From the scientific research it is discovered that the copper metal keeps the water of the River Clean.

(P) **Ashram Arrangement:-** Life of a person had been divided into four parts since the ancient period. In Sequence first was the *brahmcharya Ashram*, Second was Girhasth Ashram, third as *Sanyas Ashram* and fourth was *Banprasth Asahram*. This arrangement was very much useful for the ecological balance of the environment. in *Brahmacharya Asharam*, Children were sent to the *ashram* (School) of Master. In Grihasth Ashram persons were shouldering the responsibilities of a family life. After sharing this responsibility persons used to go to the *jungle* (i.e. forest) where they had to depend fully on jungle (Forest). Thereafter, persons accompanied with saints and adopted *Sanyas* and used to move from one place to another. During this journey period they were having all sorts of sympathy love and affection with all the creatures of the universe and tried their level best to keep the environment a clean and fresh.

(Q) **Vegetarian:-** Ancient Indian knowledge permits to take vegetarian food. On the basis of the importance of religion persons engaged in worshiping God were prohibited not to take non-vegetarian food. It was considered that the person take what type of food on the basis of food the approach in life and thinking will be accordingly determined. If a person is of non-vegetarian group, he will be involved in enjoyment in different bad ways. If a person is of the category of vegetarian in greater extend he will be performing worship of God, act honest work show sympathy and co-operation etc. in this way, people will have good health. The vegetarian and on the other hand he keeps watch for safeguard of all the creatures of the world.

(R) **Non-violence:-** The non-violence is very important in Indian knowledge. If is said that non-violence is a great religion. Every living being/creatures has soul and the soul is the form of the God. If any living creature is given trouble that means trouble is given to the Almighty. Therefore, killing of a living being is considered to be a sin and hence sympathy to be extended to all living begins. From this view point ecology remaining under balance.

(S) **Dead Bodies/Buried:-** On the basis of the Indian *Vedic* Knowledge after demise of a Hindus there is custom to burn the dead-bodies. It is viewed/ considered that after demise of human being there is numerous Chemical reactions due to which the environment is polluted. If the dead-bodies are burnt the environment will be a fresh. This knowledge also helps in the management of Environment Resources.

(T) **Natural Resources As God And Godess:**

In Veds- this description is found basically that all sorts of Natural Resources are of different God and Godess. Thus, on being had the views of God and Godess by the Indians, it has been tried to save the environment from being decreased. There is description of wind God, Sun God, Fire God etc. and there is a tradition of worshiping these.

(U) **Trees:** In Indian epic- *Matsya Puran* there is a description/writing that plantation of trees is a holy/sacred action. One tree was considered as equal to ten sons. In Indian society, there was a custom to worship trees and moving around it with worshiping view. It was considered the existence of God in the trees. Trees of *Peepal, Burgad, Neem, Kalp, Rudrasksh, Amla* etc. Were threaded with sacred thread and persons engaged in *Puja* (worship) acts more around the tees so that one may have blessed imparted religious merits and trees may live longer.

(V) **Festivals:-** Description of festivals are found in India epics. In India, festivals relate to environment imbalance. The Durga Puja is such a festival which is celebrated every year in the month of October in which 'MAHALIYA' is of one day when the entire house is cleaned fully due to which bacteria of the diseases do not get chance to grow up. In that very way, festival of *Holi* is celebrated in the families of Hindus community. Before one day of Holi, there is a custom to burn *aagja* in which all sorts of wasted materials of houses are accumulated at one place and is burnt. These two festivals work for the balance of the environment.

CONCLUSION

It is taken into consideration that there had been development of knowledge duly percepted on sacred views / ideas first of all in India all over the world. The people of German discovered many new inventions by taking *VED* epics from India. The Indian saints have been supported with the knowledge of new observation and discovers from present science. In India, there are two chief methods one is called PSYCHIC method (Spiritual method) and another is called PHYSICO-TECHNOLOGICAL method. In spiritual method, knowledge is gained through INTUTION whereas from Physico technological method with the help of machines and equipments, observations and laboratory are gained from the experiment. Thus, to-day, as well, India knowledge is contextual and full of importance. In *VEDS*, there is praying of a presentation of environment by a person since morning till bed time. In different epics it has been laid down/said that entire earth, whole atmosphere be afresh. Rivers, Forests, parks groves be cleaned. Form the fresh/cleaned atmosphere all sorts of development of a person can be possible. From these above analytical facts it is evident that the Indian indigenous knowledge is of greatest importance for the Ecological Resource Management.

REFERNECES

1. Aviansh Chandra Das : Rigvedic india.
2. B.G. Tilak : Arctic home of the Vedas.
3. Bhatiya Vidya Bhawa : Vedic Age, 1911.
4. Burgess, J. : Notes of the Hindu Astronomy, 1895.
5. Burgess, J. Translation of Surgya - Sidhanta, P.284.

6. Breoek, J.O.M. and Webb, J.W. : The purpose of Geography in a Geography of Mankind McGraw Hill, New York 1968.

7. Cambridge Ancient history Vol-l.

8. Childe, V.G. : Bronze Age, 1931.

Childe, V.G. : New Light on the most Ancient East, 1952.

Childe, V.G. : Man Makes Himself. 1955.

9. Dippti Sharma and Dr. Mahendra Kumar : Environment Study. Arjun Publication House, New Delhi- 2009.

10. Joshi, J.P. Reports of the Archaeological Survey of India, 1950, 1965 and 1970.

11. Law, B.C. : India as Described in Early. Taxts of Buddhism and Jainism, 1941.

12. Mehta, Ganga Prasad : Prachim Bharat, Banaras Hindu University, 1934.

13. Dr. Nishant Singh : Environment Law, Radha Publication, New Delhi- 2007.

14. Pahl, E.E. : Trends in Social Geography in Chorley and Haggett, P. 82.

15. Dr. P.L. Mishra : Science of Environment Vishvabharti Publication, New Delhi- 2010.

16. Pahl, E.E. Trends in Social Geography in Chorley and Hagett, P. 82.

17. Dr. Radha Kumud Mookeraji : Indus Valley Civilization The March of India, Joural Vol. xi No.-2, Feb. 1959.

